ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्...
ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद
राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा

तिथि–10 नवम्बर 2017
सृष्टि संवत्- १, ९६, ०८, ५३, ११८
युगाब्द-५११८, अंक-९१, वर्ष-१०
मार्गशीर्ष मास, विक्रमी २०७४ (नवम्बर 2017)
मुख्य संपादक : हनुमत्प्रसाद 'अथर्ववेदाचार्य'
कार्यकारी संपादक : आचार्य सतीश
सम्पर्क सूत्र: 9350945482
Web: www.aryanirmatrisabha.com
E-mail : krinvantovishwaryam@gmail.com

ऋषि दयानन्द

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा का मासिक विचार पत्र)

पाहि नो अग्ने रक्षसः पाहि धूर्त्तेरराव्णः । पाहि रीषत उत वा जिघांसतो बृहद्भानो यविष्ठ्य॥ -ऋ० १। ३। १०। ५

व्याख्यान–हे [(अग्ने)] सर्वशत्रुदाहकाग्ने परमेश्वर ! [(रक्षस)] राक्षस, हिंसाशील, दुष्टस्वभाव देहधारियों से (नः) हमारी (पाहि) पालना और रक्षा करो। (धूर्त्तेरराव्णः) कृपण जो धूर्त्त उस मनुष्य से भी हमारी (पाहि) रक्षा करो। [(रीषत उत वा जिघांसतः)] जो हमको मारने लगे, तथा जो मारने की इच्छा करता है, [(बृहद्भानो यविष्ठ्य)] हे महातेज बलवत्तम! उन सब से हमारी (पाहि) रक्षा करो।

सम्पादकीय

विकास किसका हो रहा है?

इस विश्व में प्राणिमात्र में मनुष्य सर्वोपरि है, बुद्धिशील है, कर्म करने में स्वतन्त्र है, परिणामस्वरूप उत्थान-पतन में भी स्वतन्त्र है, प्राकृतिक वातावरण बनाने और बिगाड़ने में जितना सक्षम मनुष्य है, उतना दूसरा कोई प्राणी नहीं है।

जैसा कि हम सब जानते हैं कि वर्तमान में सारा विश्व पर्यावरण प्रदूषण से चिन्तित है, और पर्यावरण सुधार के लिए किये जाने वाले चिन्तन-मनन पर ही विश्वभर के देश अरबों-खरबों रुपये व्यय कर चुके हैं, किन्तु पुनरपि स्थिति दिन दुनी रात चौगनी गति से बिगड़ती ही जा रही है। जो विश्व का सबसे शक्तिशाली देश अमेरिका है, उसने तो पर्यावरण सुधार के लिए फ्रान्स की राजधानी पेरिस में हुई सहमति से स्वयं को अलग कर लिया है अर्थात् वह अपने विकास के लिए पर्यावरण को महत्वहीन मानता है, साथ ही जो देश पेरिस में बनायी गयी सहमति से सहमत हैं वे भी कितना पालन, संवर्धन कर रहे हैं? यह भी एक विचारणीय प्रश्न ही बना हुआ है।

वर्तमान में दिल्ली जो कि हमारे देश की राजधानी है, पर्यावरण के प्रकोप से अत्यन्त त्रस्त है, जो धूल उड़ रही है, जो धुंआ उठ रहा है, जो रसायन छोड़े जा रहे हैं, वे अन्तरिक्ष में विलीन नहीं हो पा रहे हैं, फलतः न तो सूर्य की किरणें दिल्ली में धरती को छू पा रही हैं और न ही स्वच्छ वायु का आवागमन हो पा रहा है जिससे प्राणिमात्र की प्राणक्रिया बाधित हो रही है, श्वास जो प्राण के मूल आधार है जब वे ही निर्बाध नहीं है, प्रशस्त नहीं है तो फिर हम प्राणवान- अर्थात् स्वस्थ कैसे रह सकते हैं?

चिकित्सालय भरे पड़े हैं, शैय्या (बेड) रिक्त नहीं हैं, अनेक प्रकार की बिमारियों ने मानव शरीरों को जकड़ कर निष्प्राण कर दिया है, पर्यावरणविद् चिन्तित हैं, सूचना माध्यम (मीडिया) के लोग कोलाहल कर रहे हैं, सरकार चिन्ता में है, ग्रीन ट्रीब्यूनल आदेश पर आदेश दे रहा है, किन्तु समाधान कुछ नहीं हो पा रहा है। दूसरे स्थान पर है **'जल'** इसकी स्थति किसी से छुपी नहीं है, वाटर फिल्टर से आगे सारा देश आर. ओ.-आर. ओ. चिल्ला रहा है, स्थानीय भूमि से निकाले जाने वाला जल बहुत थोड़े स्थानों पर ही मुख धोने योग्य, कुल्ला करने योग्य बचा हुआ है, अन्यथा मुख में लेते ही रोम-रोम सिहर उठता है, कहीं समुद्र के जल की तरह खारा तो अधिकांश स्थानों पर तैलीय कषैला पानी ही मिलता है। तीसरे क्रम पर **'अन्न'** (दालें, सब्जियां, गेहूँ, चावल एवं फलादि) यह भी कीटनाशकों व रासायनिक उर्वरकों से इतना प्रदूषित हो चुका है कि लाइलाज बिमारियों के रूप में प्रकट हो रहा है।

पाठकगणों! मानव जीवन की सर्वप्रथम तीन मूल आवश्यकताओं **'वायु, जल एवं अन्न'** की अब यह दुर्दशा हो चुकी और अभी भी निरन्तर हो रही है। तब चौथी जो आवश्यकता भवन है, वह यदि भव्य (आलीशान) बन भी गये, जैसे कि बनते ही जा रहे हैं, तो उनका क्या करोगे? अन्य जो

शेष अगले पृष्ठ पर

संपादकीय का शेष...

आवश्यकताएं वाहन, सड़क, बिजली आदि क्या इन्हें ही विकास कहते हैं। सारे देश में गाँव-नगर के वार्ड से लेकर संसद के सदस्य तक के जितने चुनाव लड़े जा रहे हैं, केवल इसी विकास की बात करते हैं- कहीं गुजरात मॉडल की बात है, तो कहीं बिहार मॉडल की, कहीं हिमाचल मॉडल है तो कहीं बंगाल मॉडल। लेकिन इन विकासवादियों से पूछिए तो सही कि- किस प्रान्त का वायु शुद्ध है? किस प्रान्त में जल शोधक (आर. ओ.) की आवश्यकता समाप्त हो गयी? कहाँ का अन्न निर्भान्त होकर, संशय रहित खाने योग्य है? किस नगर में, किस प्रान्त में जाकर हम अपने मासूम बच्चों को दूध पिलाएं और कह सकें कि- बेटा पी लो! यह शुद्ध गोदुग्ध है। महिषी (भैंस) दुग्ध या अजा (बकरी) दुग्ध है! किस प्रान्त में जाकर हम कह सकें कि- बेटा भर पेट खाओ! यह फल शुद्ध है! रासायनिक उपचारों से रहित है, यह सब्जियां किसी गन्दे नाले की नहीं हैं, इनमें इंजेक्शन नहीं लगे हैं, यह चाकलेट, यह बिस्किट, यह औषधियां सर्वथा शाकाहारी पदार्थों से ही निर्मित हैं! क्या है कोई ऐसा मॉडल? क्या हुआ है कहीं ऐसा विकास? आखिर यह विकास किसका है? मानव का नहीं! वायु का नहीं! जल का नहीं! अन्न का नहीं! औषधियों का नहीं! वनस्पतियों का नहीं! फिर किसका?

गाँव उजड़ रहे हैं, खेत या तो उद्योगों की भेंट चढ़ गये, चढ़ रहे हैं, या आवासीय योजनाओं का शिकार हो रहे हैं, या फिर हाइवे, एक्सप्रैस वे और जो थोड़े बचे हों तो बाबाओं के आश्रम! शहरों में भीड़ बढ़ती ही जा रही है, श्वास-प्रश्वास लेना कठिन है, लेकिन फिर भी यह विकास शहरों में ही घूम रहा है, हिमालय पर्वत की श्रृंखलाओं में बसे गाँव जो सीमाओं के प्रहरी थे, खाली हो रहे हैं, पलायन तीव्र गति से बढ़ता जा रहा है, उत्तराखण्ड, हिमाचल जैसे हिमालयी राज्यों में पलायन आयोग बनाये गये हैं, किन्तु पलायन रुका नहीं है। ऐसी परिस्थिति में विचार आता है- विकास तो लंका में रावण ने भी किया था, जो आज तक इतिहास में किसी ने नहीं किया। फिर हमारी दिशा क्या है? और इस दिशा में इसी प्रकार चलते रहे, तो दशा क्या होगी? विचारिए!

वेद का आदेश तो हम-आप सभी दोहराते ही रहते हैं और दोहराते रहेंगे- **ओ३म् द्यो: शान्ति: अन्तरिक्षं शान्ति...**, किन्तु पाठको! शान्ति के लिए पुरुषार्थ चाहिए। पुरुषार्थ...!!

मनुर्भव:

क्या मात्र शरीर धारण करने से ही कोई मनुष्य बन जाता है? क्या अन्य पशु-पक्षी, जीव-जन्तु शरीर धारण करने से ही वैसे कहलाए जाते हैं? इस आधार पर मनुष्य और अन्य पशु-पक्षियों व जीवों में क्या अन्तर है?

अन्य जीव मात्र शरीर धारण करने से ही वैसे बन जाते हैं जबकि मनुष्य मात्र शरीर धारण करने से ही मनुष्य नहीं कहलाता है। इसीलिए मनुष्य के साथ उसके गुणों के कारण कई बाद जानवरों के विशेषण जोड़ देते हैं जैसे- चालाक मनुष्य को लोमड़ी, हिसंक को भेड़िया, धोखेबाज को बगुला, मुर्ख को उल्लु तथा इसी प्रकार जैसे-जैसे गुण वाला मनुष्य होता है वैसा-वैसा विशेषण इससे जोड़ते चले जाते हैं। जब्कि जानवरों के साथ मनुष्य रूपी विशेषण सामान्यता नहीं जोड़े जाते हैं।

अत: मनुष्य में कुछ गुणों का होना आवश्यक है उसके मनुष्य बनने के लिए। मानव केवल शरीर धारण करने से ही मनुष्य नहीं बन जाता जैसा कि अन्य पशु, पक्षी व जीव केवल शरीर धारण करने से ही स्वभावत: ऐसे बन जाते हैं, लेकिन मनुष्य को मनुष्य बनने के लिए कुछ गुणों को अर्जित करना पड़ता है अन्यथा वह मनुष्य नहीं कहलाता है और उसकी तुलना पशुओं से करने लग जाते हैं। मनुष्य को उन गुणों को धारण कर अपने स्वभाव का निर्माण करना पड़ता है और उन्हीं को मानवोचित् गुण कहा जाता है जिनके अपनाए बिना यह मनुष्य ही नहीं कहला सकता। मनुष्य का शरीर धारण करने के बाद भी उसे कुछ मूलभूत गुणों को धारण करना ही पड़ेगा अपने आप को मनुष्य कहलवाने के लिए। आगे जब मनुष्य उन गुणों को धारण कर लेता है तो तब वह मनुष्य ही नहीं कहलाता बल्कि उसके साथ एक और विशेषण जुड़ जाता है और उसे 'अच्छा' मनुष्य कहा जाता है अर्थात् आज समाज में मानवोचित गुणों का इतना ह्रास हुआ है कि इन गुणों के धारण करने वाले को मनुष्य ही नहीं, अच्छा मनुष्य, श्रेष्ठ मनुष्य, बढ़िया आदमी कहना प्रारम्भ कर देते हैं। आइए जानने का प्रयास करते हैं कि ऐसे क्या गुण हैं जिनसे मनुष्य केवल शरीरधारी न रहकर अच्छे मनुष्य की श्रेणी में आ जाता है और जिनके न होने से वह मनुष्य की श्रेणी से भी हटकर पशुओं की श्रेणी में चला जाता है। हमारी मूल प्रकृति और योग्यता के अनुसार निम्न पांच ऐसे मुख्य गुण हैं जिनका होना प्रत्येक मनुष्य के लिए आवश्यक है चाहे वह किसी भी मत में क्यों न हो, इनको स्वीकार करने में उसे कोई आपत्ति नहीं हो सकती है। वे पांच मुख्य गुण क्या है? आइए जानते हैं-

1) वैज्ञानिक प्रवृति व तार्किक बुद्धि
2) अध्यात्म, धर्म व आस्था के नाम पर अन्धश्रद्धा से बचना।
3) केवल भाग्यवाद के स्थान पर पुरुषार्थ व क्रियाशीलता का होना।
4) व्यसनमुक्त व आहार-विचार और व्यवहार का मर्यादित होना।
5) सामाजिक, राष्ट्रीय समस्याओं के प्रति संवेदनशील होना।

-मानव के इन उपरोक्त गुणों पर चर्चा अगले अंक में रहेगी।

-आचार्य सतीश

आओ यज्ञ करें!

अमावस्या	18 नवम्बर	दिन-शनिवार	मास-मार्गशीर्ष	ऋतु-हेमन्त	नक्षत्र-विशाखा
पूर्णिमा	3 दिसम्बर	दिन-रविवार	मास-मार्गशीर्ष	ऋतु-हेमन्त	नक्षत्र-कृतिका/रो.
अमावस्या	18 दिसम्बर	दिन-सोमवार	मास-पौष	ऋतु-शिशिर	नक्षत्र-मूल
पूर्णिमा	2 जनवरी	दिन-मंगलवार	मास-पौष	ऋतु-शिशिर	नक्षत्र-आर्द्रा

वेदवाणी वैज्ञानिक भाषा संस्कृत

-आर्य सोनू, कैथल

परमपिता परमात्मा प्रदत्त प्रथम प्राचीनतम भाषा संस्कृत है। ईश्वर प्रदत्त होने के कारण इसकी लिपि को देवनागरी कहा जाता है। प्राचीनतम इसलिए क्योंकि इससे पूर्व कोई भाषा न थी (क्योंकि मानव समाज ही न था, तो भाषा कैसी) प्रथम इसलिए क्योंकि सृष्टि की उत्पत्ति के पश्चात चार ऋषियों की आत्मा में वेदों के प्रकाश के साथ ही संस्कृत का अवतरण हुआ। इसी से मनुष्य ने सर्वप्रथम बोलना सीखा। संस्कृत अपने आपमें पूर्ण भाषा है। अन्यों की भांति इसमें आज तक किसी नियम अथवा चिन्ह तक के बदलाव की जरुरत नहीं पड़ी। यह विशेषता इसके देववाणी (ईश्वर प्रदत्त) होने का भी प्रमाण है, क्योंकि मानव निर्मित प्रत्येक चीज समय के साथ परिवर्तन हो जाती है या की जाती है।

संस्कारित भाषा- मूलतः तो इसका नाम देववाणी/देवभाषा ही था, किन्तु ऋषियों द्वारा बार-बार संस्कार होने के कारण इसे संस्कृत भी कहा जाने लगा। यहां संस्कार से अर्थ संशोधन नहीं क्योंकि संस्कृत को उसकी आवश्यकता ही नहीं। फिर संस्कार कैसा? जब मानव समाज आलस्य, प्रमाद, अविद्या के कारण भाषा का रूप विकृत, अशुद्ध, गलत उच्चारण, लेखन आदि करने लगा तो ऋषियों ने समाज सुलभ बनाने हेतु व्याकरण आदि की रचना की ताकि मानव आसानी से शुद्ध भाषा का ज्ञान प्राप्त करे। इन संस्कारों के कारण इसकी संस्कृत संज्ञा हुई। दूसरा यह कि संस्कृत भाषा में कोई गाली नहीं है। यह भी संस्कार के कारण है। इन संस्कारों से मूल वेद भाषा से कोई छेड़छाड़ नहीं हुई अपितु ऋषियों ने सामाजिक सहूलियत हेतु इसके संस्कार किए। समय-समय पर महर्षि यास्क, पाणिनी व पतन्जली ने संस्कृत व्याकरण को समृद्ध किया।

भाषाओं की जननी- ऋषि दयानन्द ने अपने व्याख्यानों (उपदेश मंजरी) में कहा कि नई भाषा मूल भाषा का अपभ्रंश होकर उत्पन्न होती है। मनुष्य ने अपने अविद्या व आलस्य के कारण सूक्ष्म-सूक्ष्म बदलाव देवभाषा में किए और अनेक भाषाएं उत्पन्न हुई। प्रमाण हेतु विभिन्न भाषाओं में अनेक ऐसे शब्द ढूंढ़े जा सकते हैं जो न्यूनाधिक परिवर्तन से बने हों, सर्वप्रथम मॉर्डन व वर्ल्ड सिविलाइजेसन की भाषा कही जाने वाली अंग्रेजी को ही लेते हैं।

संस्कृत शब्द	अंग्रेजी में थोड़ा परिवर्तन	हिन्दी अर्थ
गूढ़	गोड (God)	गुप्त सत्ता
ईश	ईशा	स्वामी
चर्च	चर्च	धर्म चर्चाघर
नवगति	नेविगेसन	परिचालन
त्री	थ्री	तीन
हस्तबन्ध	हसबैन्ड	पति
मातृ-पितृ	मदर-फादर	मात-पिता
गौ	काऔ (Cow)	गाय
यूयम्, वयम्	यू, वी (you,we)	तुम, हम

इससे सहज अनुमान लगाया जा सकता है कि संस्कृत के शब्द परिवर्तित होकर विभिन्न भाषाओं से (ईरानी, युनानी) होते हुए अनेक भाषाओं में गए हैं। इसी भांति अन्य भाषाओं फ्रैंच आदि में भी अनेक शब्द आपको मिलेंगे।

इसी कारण एडेलिंग नामक विद्वान ने पूर्वी व पश्चिमी 100 भाषाओं की जननी संस्कृत को बतलाया व यूनानी, लैटिन व जर्मन भाषा परिवारों की निकटवर्ती जन्मदात्री कहा है। इसी तरह अन्य विद्वान (पश्चिमी) भी स्वीकार करते हैं कि एक समय संस्कृत समस्त विश्व की भाषा थी।

जर्मनी की एयरलाइन्यस का नाम लुप्तांसा है जो संस्कृत शब्द लुप्त हंस का बदला रूप है। जर्मनी के लोग अब भी स्वयं को आर्यवंशज व संस्कृत को सर्वभाषा जननी मानते हैं। इसी कारण वहां एक विश्वविद्यालय संस्कृत को समर्पित किया गया है। जर्मन चिकित्सा विभाग का नाम चर्कोलॉजी महर्षि चरक के नाम पर है। शायद इसी कारण हिटलर ने नाजी सेना के झण्डे का निशान 卐 (स्वास्तिक) अपनाया।

विज्ञान की भाषा- संस्कृत वैज्ञानिक भाषा भी है। क्योंकि वैज्ञानिकों ने जब अन्तरिक्ष में संदेश भेजने की कोशिश की तो समस्या थी कि अन्तरिक्ष यात्री को भेजा गया सन्देश उल्ट जाता था (वाक्य उलट जाता था)। इससे अर्थ का अनर्थ हो जाता था। उन्होंने कई भाषाओं में प्रयोग किया किन्तु यही समस्या आई अन्त में संस्कृत में संदेश भेजा व समस्या का समाधान हुआ। क्योंकि संस्कृत में वाक्य उलट होने पर भी अर्थ नहीं बदलता जैसे- **अहम् गृहम् गच्छामि / गच्छामि गृहं अहम्**, दोनों का अर्थ समान है। यही नहीं कम से कम शब्दों में अधिकाधिक संदेश के लिए संस्कृत कम्प्यूटर हेतु भी सबसे उत्तम भाषा मानी गई है। इसी क्षमता (कम शब्दों में अधिक) के कारण यू. एस. ए. के परमाणु परीक्षण के समय वैज्ञानिक ओपनहीमर ने विस्फोट से उत्पन्न अपार ऊर्जा को अभिव्यक्त करने के लिए चुना। यानि किसी और भाषा में उन्हें कोई शब्द ही नहीं मिला जो परमाणु की अपार ऊर्जा का शब्दों में बयां कर सके। उस समय ओपनहीमर ने गीता का निम्नलिखित श्लोक पढ़ा-

दिवि सूर्यसहस्रस्य भवेद् युगपदुत्थिता।
यदि भाः सदृशी सा स्याद् भासस्तस्य महात्मनः॥ -गीता

अर्थात् - आकाश में एक साथ हजारों सूर्य के उदय होने से जो प्रकाश उत्पन्न होगा वह भी विश्वरूप परमात्मा के प्रकाश के सदृश शायद ही हो। और फिर गीता के ग्यारवें अध्याय के 32वें श्लोक का सन्दर्भ दिया-

कालोऽस्मि लेकक्षयकृत्प्रवृद्धो लोकान्समाहर्तुमिह प्रवृतः।
ऋतेऽपि त्वां न भविष्यन्ति सर्वे येऽवस्थिताः प्रत्यनीकेषु योधाः॥-गीता

अर्थात्- मैं लोकों का नाश करने वाला बड़ा हुआ महाकाल हूँ इस समय इन लोकों को नष्ट करने के लिए प्रवृत हुआ हूँ। अतः जो प्रतिपक्षी सेना के योद्धा लोग हैं, वे तेरे युद्ध न करने पर भी नहीं रहेंगे (इनका नाश हो जाएगा)।

इन श्लोकों के द्वारा परमाणुत्पन्न अपार ऊर्जा की शब्दों में अभिव्यक्ति ओपनहीमर जी कर पाए। यह है महान भाषा संस्कृत का वैभव और सामर्थ्य।

- शेष अगले अंक में

संस्कारवान् शिक्षा ही सांसारिक सुखों का आधार है

-आचार्य लोकेन्द्रदेव शास्त्री, दिल्ली

सन्तान जितेन्द्रिय, विद्याप्रिय और सत्संग में रूचि करें वैसा प्रयत्न करते रहें। व्यर्थ क्रीड़ा, रोदन, हास्य, लड़ाई, हर्ष, शोक, किसी पदार्थ में लोलुपता, ईर्ष्या, द्वेषादि न करें।......सदा सत्यभाषण शौर्य, धैर्य, प्रसन्नवदन आदि गुणों की प्राप्ति जिस प्रकार हो, करावें।
-(द्वितीय समुल्लास)

सन्तानों को उत्तम विद्या, शिक्षा, गुण, कर्म्म और स्वभावरूप आभूषणों का धारण कराना, माता-पिता, आचार्य्य और सम्बन्धियों का मुख्य कर्म है। सोने, चांदी, माणिक, मोती, मूँगा आदि रत्नों से युक्त आभूषणों के धारण करने से केवल देहाभिमान, विषयासक्ति और चोर आदि का भय तथा मृत्यु का भी सम्भव है। संसार में देखने में आता है कि आभूषण के योग से बालकादिकों का मृत्यु दुष्टों के हाथ से होता है। -स्वामी दयानन्द तृतीय समुल्लास (सत्यार्थ- प्रकाश)

महर्षि देव दयानन्द ने सन्तानों को उत्तम विद्या के साथ-साथ गुण, कर्म और स्वभाव रूप आभूषणों का धारण कराना मुख्य कर्म बताया, परन्तु आज के वातावरण में देखने में आता है कि संसारिक ऐश्वर्यों को प्राप्त कर माता-पिता सन्तानों को संसारिक सुख देकर अपने कर्त्तव्यों की इतिश्री मान लेते हैं। मनुष्य का मुख्य लक्ष्य केवल भौतिकवाद (भोगवाद) के साधनों का जुटाना व उनके अपनाने से ही संसारिक उन्नति मान बैठना दुःख ही का कारण है। विद्या वह धन है जो गुण, कर्म, स्वभाव का परिवर्तन करके संसारिक उन्नति के साथ-साथ संसार को ठीक-ठीक जानकर परम सुख की प्राप्ति कराती है। वह संसार के भोगों में लिप्त नहीं कराती अपितु वास्तिकता से परिचय कराती है। हम आज भोगवादी संस्कृति की शरण में आकर केवल भोग के साधनों को जुटा कर, रोग, शोक, भय आदि उन्मादों को धारण कर अपने ही जीवन को नरक बना लेते हैं व अपनी सन्तान को भी उसी नरक में धकेल देते हैं। क्योंकि हमारा लक्ष्य केवल संसारिक ऐश्वर्यों को प्राप्त करना मात्र है। हम इस से आगे कभी विचार भी नहीं करते हैं।

विद्या वह आभूषण है जिसे धारण करके मनुष्य सच्चा धार्मिक, संस्कारवान, चरित्रवान, माता-पिता भक्त व सच्चा देशभक्त बनता है आज का पढ़ा लिखा नौजवान जिसे न अपने देश पर स्वभिमान है न अपने संस्कारों पर गर्व है फिर वह माता-पिता भक्त कैसे हो सकता है। क्योंकि जिस विद्या से वह मनुष्य बन सकता था वह विद्या अब कहां दी जाती है केवल अर्थकारी विद्या पढ़ाई जाती है। महर्षि दयानन्द की धारणा यही थी कि मेरे देश का हर युवक व युवती देशभक्त हो। आचार-विचार व्यवहार से युक्त, सभ्य नागरिक बन देश, समाज व राष्ट्र का नाम रोशन करे। आज का युवा वर्ग भटका हुआ है। उसे मार्ग दिखाने वाला कोई नहीं दीखता। महान ऋषियों और आचार्यों के त्याग में वह रास्ता दिखाई देता है जिसको हमारा सरकारी तन्त्र, राजनीति व नौकरशाही मैकाले पद्धति से पढ़ा वर्ग मानने को तैयार नहीं है। आज वही शिक्षा पद्धति है जो अंग्रेजी शासन में हमें दी जाती थी। स्वतंत्र भारत में डा० राधाकृष्ण जी के नेतृत्व में जो शिक्षा आयोग गठित किया गया था उन्होंने भी अपनी रिपोर्ट में यह सुनिश्चित करने का प्रयास किया था कि भारतीय परिवेश में बच्चों को योग्य बनाने हेतु भारतीय संस्कृति व धार्मिक मूल्यों की शिक्षा जरूरी है जिससे सन्तानों के आचार-विचार व व्यवहार में परिवर्तन आ सके और वे सभ्य नागरिक बन सकें।

परन्तु यहाँ पर धर्म की शिक्षा देना निषेध माना जाता है। धर्म को केवल मतमतान्तरों का रूप मान विभिन्न प्रकार के ढोंगों को बढ़ाने के पहले अवसर प्रदान किये जाते हैं। वह समाज में इतने व्यापक हो जाते हैं कि समाज उनको ही धर्म मानने लगता है। धर्म के नाम पर पाखण्ड् अन्धविश्वास व भोले लोगों को भड़काया जाता है। मजहब के नाम पर झगड़े होते हैं। अनेकों लोगों का भटकाव मत-मतान्तरों के साथ जुड़कर वे सभ्य समाज से कट जाते हैं फिर देश में आतंकवाद, नक्सलवाद जेहाद आदि उन्माद फैलाये जाते हैं। देश का सारा समय, धन, सैन्य शक्ति का अपव्यय होता है। जिससे समाज का विकास होना चाहिए। वह शक्ति अपवादों को मिटानें में व्यय होती है। राजनैतिक पार्टियां अपने-अपने स्वार्थों के कारण समाज को जोड़ने का काम न करके समाज को तोड़ने का काम करती हैं। अतः हम यह निर्णय नहीं कर पाते कि एक सभ्य समाज व श्रेष्ठ राष्ट्र का निर्माण किस प्रकार कर सकते हैं। अगर सभ्य समाज व सभ्य राष्ट्र में नागरिकों के निर्माण हेतु प्रयास करना है तो विद्या के क्षेत्र या शिक्षा पद्धति के अन्दर आचार, विचार, व्यवहार, अनाचार क्या-क्या गलत है यह शिक्षा हमें बालकों को बाल्य अवस्था में ही देनी पड़ेगी। जिस प्रकार एक वृक्ष जब पौधे के रूप में होता है उसकी हम जितनी अधिक देखभाल करते हैं वह वृक्ष सीधा और एक दिशा में ठीक-ठीक उन्नति करता है। उसी प्रकार बाल्यकाल के श्रेष्ठ संस्कार बच्चों को अर्थात् सन्तान को योग्य बनाते हैं। बाल्य अवस्था ही बच्चों के अन्दर निर्माण की अवस्था है। संस्कार, शिक्षा, आचार-विचार इसी आयु में योग्यता की नींव है। अतः आज समाज को जगाना होगा। आज नहीं जागे तो सब कुछ लुट जायेगा।

अतः विद्या वह आभूषण है जिससे सभ्य नागरिकों का निर्माण हो सकता है। आज संस्कारवान विद्या का अभाव ही पतन का कारण है। जिसके कारण चारों ओर भ्रष्टाचार, दुराचार व अनाचार का बोल-बाला है। अतः सभ्य समाज के निर्माण के लिये वह विद्या देनी होगी जिससे सभ्य समाज का निर्माण हो सकेगा।

संध्या काल

मार्गशीर्ष मास, हेमन्त ऋतु, कलि-5118, वि. 2074
(5 नवम्बर 2017 से 03 दिसम्बर 2017)
प्रातः कालः 6 बजकर 15 मिनट से (6.15 A.M.)
सांय कालः 6 बजकर 00 मिनट से (6.00 P.M.)

पौष मास, शिशिर ऋतु, कलि-5118, वि. 2074
(4 दिसम्बर 2017 से 2 जनवरी 2018)
प्रातः कालः 5 बजकर 45 मिनट से (5.45 A.M.)
सांय कालः 6 बजकर 45 मिनट से (6.45 P.M.)

मेरा उद्देश्य- भ्रष्टाचार-मुक्त भारत

–आर्य दिलबाग सिंह, पंचकुला, हरियाणा

स्वयं श्रेष्ठ गुण-कर्म-स्वभाव वाला बनना व औरों को भी-
(सवा सौ करोड़ देशवासियों...) को श्रेष्ठ बनाना है।
भ्रष्ट आचार, सोच-विचार, व्यवहार व
गुलामी के कुसंस्कार जड़ से मिटाना है,
सभी कर्तव्य-कर्मो को सत्यनिष्ठ व ईमानदारी से निभाना है।
जाति-पाति, ऊंच-नीच, भेद-भाव फूट के दैत्यों को भी जड़ से उखाड़ना है।
गरीबी, भूखमरी, बेरोजगारी, महामारी, अत्याचार, पापाचार, बलात्कार,
बेईमानी चोरी, ठगी, छल-कपट के कलंकों को भी जड़ से मिटाना है।
स्वयं आर्य बनना व औरों को भी आर्य बनाना है।
ज्ञात-अज्ञात भारतीय वीर शहीदों की कुर्बानी को यूं ही नहीं व्यर्थ गंवाना है।
स्वराज्य के लक्ष्य को पाना है, अपना तन-मन-धन इस दिशा में लगाना है।
भारतीय वीर-शहीदों के सपनों का भारत बनाना है,
भारत को फिर से समर्थ-सबल व विश्व-गुरु भी बनाना है।
धर्म से, पुरुषार्थ से धन कमाना है व संतोष, धैर्य अपनाना है,
और पुरुषार्थ/परिश्रम को कभी नहीं ठुकराना है।
सत्य विद्या को पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना है,
जीवन मूल्यों/नैतिक मूल्यों को आचरण में लाना है
शारीरिक मानसिक आत्मिक, आध्यात्मिक, सामाजिक उन्नति पाना है।
घर में भारतीय नस्ल की देशी गाय लाना है,
उसको खूब पौष्टिक आहार खिलाना है,
फिर दूध-रूपी अमृत पीना और पिलाना है,
स्वयं संस्कारी बनना व औरों को बनाना है।
मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम व धर्म-संस्थापक श्री कृष्ण जी के
पद-चिह्नों पर स्वयं चलना व औरों को चलाना है।
मेरा उद्देश्यः भ्रष्टाचार-मुक्त भारत बनाना है।
वर्तमान समय में चल रहे लघु गुरुकुल में दो दिन देकर
गुण-कर्म-स्वभाव से आर्य बनना व औरों को भी
(सवा सौ करोड़ देशवासियों...) को आर्य बनाना है।

आर्य निर्माण -महाकल्याण

–डॉ॰ चान्द कौर आर्या, चण्ढ़ीगढ़

बनें 'आर्य' सभी नर-नारी, हों आर्य सभी नर-नारी
दहेज के कारण कन्या की बलि यहाँ घर-घर में चढ़ती है,
आर्य 'मनु' जिसके पुजक थे, देखो घर में क्यों सड़ती है?
जलती है कोई अग्नि में, है कैसी ये लाचारी?
बनें 'आर्य' सभी नर-नारी, हों आर्य सभी नर-नारी।
यहाँ देख लो-जंग छिड़ी अब देश के कोने-कोने में,
हर दिन बालाएं रोती सिन्दूर को खोने-धोने में,
जीवन खोएं ना सोने में, उठाएं तीर-कटारी
बनें 'आर्य' सभी नर-नारी, हों आर्य सभी नर-नारी,
अब तो देश में पर्व मनाते, मासूमों की लाशों से,
शैतान खुश होते हैं मन में, अपने इन्हीं तमाशों से,
रोको इनको, आर्य बना लो, ये बात ना हमने विचारी,
बनें 'आर्य' सभी नर-नारी, हों आर्य सभी नर-नारी।
मिलके खत्म हमें करनी होगी जााति-प्रथा भी जगभर में,
एक खून हममें बहता है, एक सा आत्मा हर नर-नारी में,
हर कण-कण में प्रभु समाया, ये सृष्टि उसी की सारी
बनें 'आर्य' सभी नर-नारी, हों आर्य सभी नर-नारी।
अपने देश में है जरूरत पुनः लाजपत राय की,
धर्म की खतिर मिटने वाले बाल हकीकतराय की,
जिन वीरों ने जान गवांकर, प्राण लुटाकर, सींची ये फुलवारी,
बनें 'आर्य' सभी नर-नारी, हों आर्य सभी नर-नारी।
राष्ट्र मांग रहा अब हमसे पल-पल में कुर्बानियाँ,
शैतानों की मिटानी होंगी, हमको सभी निशानियाँ
देश सम्भालो, हिम्मतवालो, इसे बचालो, आर्य बना लो,
करे 'चान्द' ये विनती प्यारी
बनें 'आर्य' सभी नर-नारी, हों आर्य सभी नर-नारी।।

आर्य परिवार सम्मेलन मुजफ्फर नगर, उत्तर प्रदेश (29 अक्टुबर 2017)

ओ३म्

राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा

सूचना

आर्य गुरुकुल महाविद्यालय

स्थान : सांगोपांग वेदविद्यापीठ, आर्ष गुरुकुल टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-81

आर्य प्रचारक कक्षा

दिल्ली में होने वाली वर्तमान वर्ष की आर्य प्रचारक कक्षाओं की समय सारणी इस प्रकार है-

1) प्रथम सत्र की कक्षा 21-22 अक्टुबर 2017 को संपन्न हो चुकी है।

2) दूसरे सत्र की कक्षा 09-10 दिसम्बर 2017 को होगी।

3) तीसरे सत्र की कक्षा 13-14 जनवरी 2018 को होगी।

4) चतुर्थ सत्र की कक्षा 01-02 मार्च 2018 को होगी।

जो भी प्रचारकगण दिल्ली में पंजीकृत हैं व दिल्ली में कक्षा कर रहे हैं वे सभी इन तिथियों पर कक्षा में उपस्थित हों।

-आचार्य सतीश

सम्पर्क - 9350945482

आर्य प्रचारक कक्षा दिल्ली में प्रचारकों के साथ आचार्य सतीश जी (21-22 अक्टुबर प्रथम सत्र)

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा आयोजित दो दिवसीय सत्रों व सभा से सम्बन्धित नवीन जानकारी सभा की बेवसाईट-

www.aryanirmatrisabha.com

पर उपलब्ध है। अत: आप वहाँ से जानकारी ले सकते हैं। यह पत्रिका भी प्रत्येक मास दिनांक 10 को सभा की बेवसाईट पर डाल दी जाती है अत: पत्रिका को पढ़ने के लिए साईट के लिंक **www.aryanirmatrisabha.com/पत्रिका** पर जाएं।

05 नवम्बर-03 दिसम्बर 2017 **मार्गशीर्ष** ऋतु- हेमन्त

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
						कृतिका कृष्ण प्रतिपदा/द्वितीया 5 नवम्बर
रोहिणी कृष्ण तृतीया 6 नवम्बर	मृगशिरा कृष्ण चतुर्थी 7 नवम्बर	आर्द्रा कृष्ण पंचमी 8 नवम्बर	पुनर्वसु कृष्ण षष्ठी 9 नवम्बर	पुष्य कृष्ण सप्तमी 10 नवम्बर	आश्लेषा कृष्ण अष्टमी 11 नवम्बर	मघा कृष्ण नवमी 12 नवम्बर
पू॰ फाल्गुनी कृष्ण दशमी 13 नवम्बर	उ॰ फाल्गुनी कृष्ण एकादशी 14 नवम्बर	हस्त कृष्ण द्वादशी 15 नवम्बर	चित्रा कृष्ण त्रयोदशी 16 नवम्बर	स्वाती कृष्ण चतुर्दशी 17 नवम्बर	विशाखा कृष्ण अमावस्या 18 नवम्बर	अनुराधा शुक्ल प्रतिपदा 19 नवम्बर
ज्येष्ठा शुक्ल द्वितीया 20 नवम्बर	मूल शुक्ल तृतीया 21 नवम्बर	पूर्वाषाढ़ा शुक्ल चतुर्थी 22 नवम्बर	उत्तराषाढ़ा शुक्ल पंचमी 23 नवम्बर	उत्तराषाढ़ा शुक्ल षष्ठी 24 नवम्बर	श्रवण शुक्ल षष्ठी 25 नवम्बर	धनिष्ठा शुक्ल सप्तमी 26 नवम्बर
शतभिषा शुक्ल अष्टमी 27 नवम्बर	पूर्वाभाद्रपदा शुक्ल नवमी 28 नवम्बर	उत्तराभाद्रपदा शुक्ल दशमी 29 नवम्बर	रेवती शुक्ल एकादशी 30 नवम्बर	अश्विनी शुक्ल द्वादशी/त्रयोदशी 1 दिसम्बर	भरणी शुक्ल चतुर्दशी 2 दिसम्बर	कृतिका/रोहिणी शुक्ल पूर्णिमा 3 दिसम्बर

Rishi Dayanand - His Life And Work

-Saroj Arya, Delhi

There was a tap at Swami Virajanand's door.

"Who is there ?"

"A Sanyasi."

"What is your name?"

"Dayanand Saraswati"

"Do you know vyakarana (grammar)?"

"Yes, I have studied Sarasvata, etc."

At this reply the door opened, and Dayanand walked in. Virajanand after putting the young aspirant some questions to test his previous knowledge addressed him thus:-

"Dayanand, there is a vast difference between the Risikrita Granths of pre-Mahabharata days, and the post-Mahabharata Sanskrit literature which is the work of ordinary human beings. The former is characterised by sublimity of thought, natural and spontaneous expression and a lofty spirituality, the latter, written by narrow-minded and prejudiced men, lacks that universality of appeal, which the former has. That I abhor this post-Mahabhrata literature is well known. It seems that you will have to disabuse your mind of all that you have learnt, before you can begin your studies here."

"Just as you please," Dayanand answered after some thinking for a while.

"And throw all the books into the river flowing nearby."

"I shall do it," said Dayanand with a shoot, He dared not refuse. He seemed to be under a spell.

"But there is another thing, yet. Generally I don't teach Sanyasis. They don't cook their own food, and I have none to give them. So you will have to make your own arrangements, before you can hope to devote yourself to your studies whole-heartedly."

"you need not have any anxiety on that account. Sir, I would be the last man to trouble you about my food arrangements."

Dayanand was formally admitted as a pupil. Unluckily, at that time the province was in the agony of a terrible famine, and even the rich found it hard to give anything in charity. our hero had, therefore, a very hard time. But he faced it like a man, and lived on the coarsest food available and would even go without food at times. His primary aim was to learn. At last the clouds began to lift, and one pandit Amar Lal, a well-to-do astronomer of Mathura, struck by Dayanad's knowledge and personality, took to supply him with food and books. It is said that this Pandit was a great friend of the needy. Dayanand used to speak of this man with feeling of heartfelt gratitude all his life. Luckily Pundit Amar Lal was also from Gujrat.

Dayanand works hard continuously in Mathura. He worked the whole day, and would often be seen studying at night by the light of the earthen lamps which women deposited into the crevices of wells. In his moments of leisure he would hold discussions with those around him, and all this he did in addition to so many miscellaneous duties, which as a dutiful disciple he had to perform.

To be continued...

द्विदिवसीय आर्य/आर्या प्रशिक्षण के बाद सत्रार्थियों के अनुभव

पूरा सत्र अभूतपूर्व था। जन्म जन्मान्तरों के कुसंस्कार और असत्य मान्यताओं को दो दिन में ही भस्मीभूत कर दिया गया। आर्ष साहित्य, वैदिक दृष्टि, हमारा अपना गुण, कर्म, स्वभाव हमारा अधिकार हमारी विरासत। हमारे कार्य सबका सही सही परिचय। सभी आचार्यों की अद्‌भुत ऊर्जा का साक्षात्कार हुआ। परमेश्वर की परमकृपा से इस महान सभा ने अपना जो लक्ष्य साधा है, अतिशीघ्र उसको प्राप्त करेगी।

मैं पूर्ण महाराष्ट्र में आपका कार्य विस्तार करने हेतु राष्ट्रीय कार्यकारिणी में मीडिया, लेखन, युवाजागरण हेतु प्रस्तुत हूँ। अखिल विश्व आर्य ओलम्पियाड की योजना के साथ प्रस्तुत हूँ।

नामः ऋषि आचार्य, आयुः 36 वर्ष, योग्यता : एम.एस.सी., पताः पूणे, महाराष्ट्र

हमें इस सत्र में बहुत अच्छा अनुभव हुआ। हमें पता चला कि हम कौन हैं और हमारा धर्म, हमारा राष्ट्र, हमारे क्या कार्य हैं और हमारा राष्ट्र के प्रति क्या कर्तव्य है। और अब तक मैं मूर्ति पूजा करता था। आज मुझे पता चला की मूर्ति केवल एक पत्थर है। वह हमारी सहायता नहीं कर सकती है। वह तो एक पत्थर है। इसलिए आज से मैंने ज्ञानी होकर। मूर्ति पूजा छोड़ दी और वेदों में भगवान की पूजा की पद्धति बताई गयी है उसे ही अपनाऊंगा तथा जो नियम हमें इस सत्र में बताऐ गये हैं उन्हीं को अपनाते हुए आगे अपना तथा अपने राष्ट्र की सेवा करने की कोशिश करूंगा।

मैं अपनी तरफ से कोशिश करूंगा कि नये आर्य लोगों को जोड़ने की कोशिश करूंगा और अपने जीवन को भी आर्य के अनुसार जीऊंगा तथा जितना सहयोग मैं दे सकता हूँ वह करूंगा और अपने राष्ट्र को अपना सहयोग दूंगा।

नामः प्रदीप कुमार, 44 वर्ष, योग्यताः बी.ए., पताः घिटोरनी, दिल्ली

मेरा अनुभव यही रहा कि अब तक भ्रान्ति में जी रही थी। सच्चा जन्म तो इन दो दिनों के सत्र में हुआ। सच की खोज में भटकती रही अब तक, लेकिन सही दिशा आज मिली है। मुझे इस बात का पश्चाताप है कि मुझे आने में देरी हो गयी। परन्तु आज से, अभी से आर्या हूँ। और विधिवत् नियमों का पालन करती रहूँगी।

मैं चाहूँगी कि ज्यादा से ज्यादा लोगों को प्रेरित करूं कि आर्य बनें और सत्य को जानें।

नामः किरन, आयुः 45 वर्ष, योग्यताः एम.ए., पताः पंचकुला, हरियाणा

ऋषि बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में रोहतक व हिसार में आयोजित कार्यक्रम

आर्य निर्माणशाला में विभिन्न स्थानों पर निर्मात्री सभा के आचार्यों द्वारा आर्य व आर्या निर्माण

स्वामी व प्रकाशक आचार्य हनुमत्प्रसाद द्वारा सांगोपांगवेद विद्यापीठ, आर्ष गुरुकुल, टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-81 से प्रकाशित

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् - समाचार पत्र मे छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक का पूर्णतया सहमत होना आवश्यक नहीं है। क्योंकि अनवधानतावश त्रुटि एवं मतभिन्न होना सम्भव है। सभी न्यायिक विवाद दिल्ली में निपटाये जाएंगे।